जय के लिए गाय

ईवा ग्रांट

चित्र: माइकल हैम्पशायर

किताब के बारे में

भारत में गायें पूज्यनीय होती हैं, और वो एक बहुत ही भाग्यशाली परिवार होता है जो गाय को खरीद पाता है.

लेकिन जब जय अपने परिवार की नई गाय को देखता है तो वो खुद को भाग्यशाली महसूस नहीं करता है. खूबी गाय एकदम पतली और बदसूरत है, वो उस मोटी सफेद गाय की तरह बिल्कुल नहीं है जिसकी जय ने अपने सपनों में कल्पना की थी और जिसके बारे में उसने अपनी मित्र शांति के सामने शेखी बघारी थी.

खूबी हर जगह जय का पीछा करती है. उससे जय को अपने पिता और अपने शिक्षक की सजा झेलनी पड़ती है. और जब भी जय, गाय का दूध दूने की कोशिश करता है, तो चंचल खूबी उससे दूर भागती है और उस काम को असंभव बना देती है.

अपनी नई गाय के कारण सजा पाने से तंग आकर, जय बाज़ार चला जाता है - जहां एक वास्तविक मुसीबत उसका इंतजार करती है.

जय को इस बात का कोई अनुमान नहीं था कि वो इकट्ठी हुई भीड़ के बीच एक दुबली गाय को देखकर खुश होगा या खूबी उसे बचाने में मदद करेगी?

ईवा ग्रांट का मनोरंजक साहसिक कार्य और माइकल हैम्पशायर के सुंदर, यथार्थवादी चित्र मिलकर युवा पाठकों को भारत के ग्रामीण जीवन और रीति-रिवाजों को एक असामान्य, करीब से देखने का मौका देते हैं.
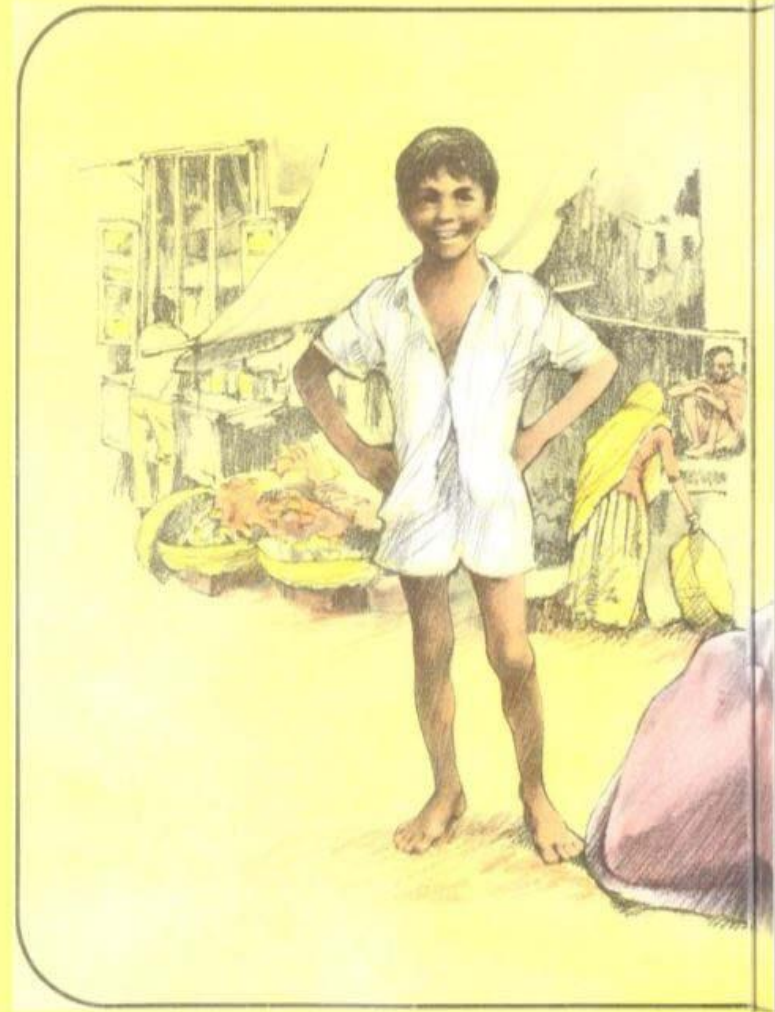
जय के लिए गाय

ईवा ग्रांट

चित्र: माइकल हैम्पशायर

विषयवस्तु
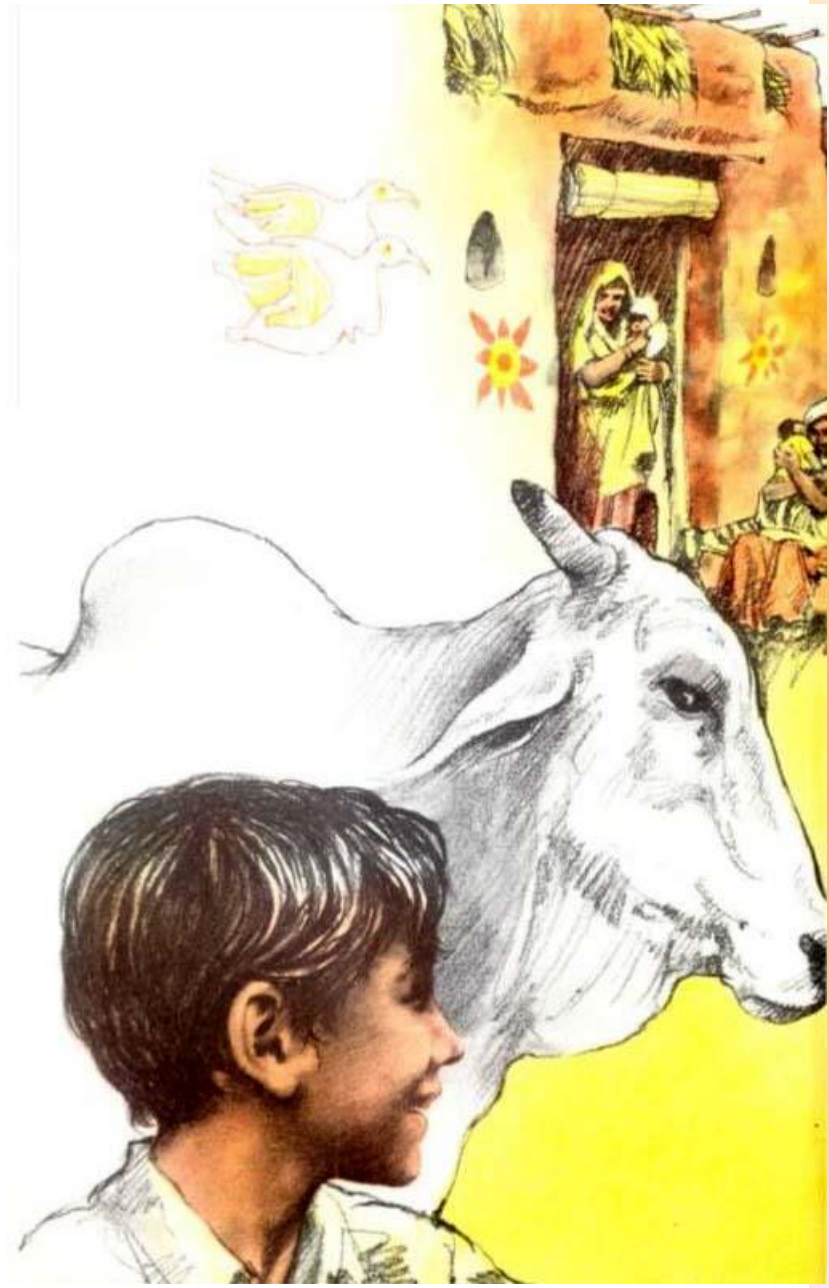
1. उसकी अपनी एक गाय

स्कूल से घर आते समय,

जय को एक बड़ी सफ़ेद गाय

के रास्ते से हटना पड़ा था.

भारत में मिट्टी-ईंटों के घरों वाले गाँव में

जहां जय रहता था,

वहां पर गायें जहां चाहें

घूमने के लिए पूरी तरह से स्वतंत्र थीं.

लोग मानते थे कि किसी के लिए भी गाय को चोट पहुंचाना एक पाप था.

जय को पता था कि उसके पिता लंबे समय से पैसे बचा रहे थे ताकि परिवार अपने लिए एक गाय खरीद सके.
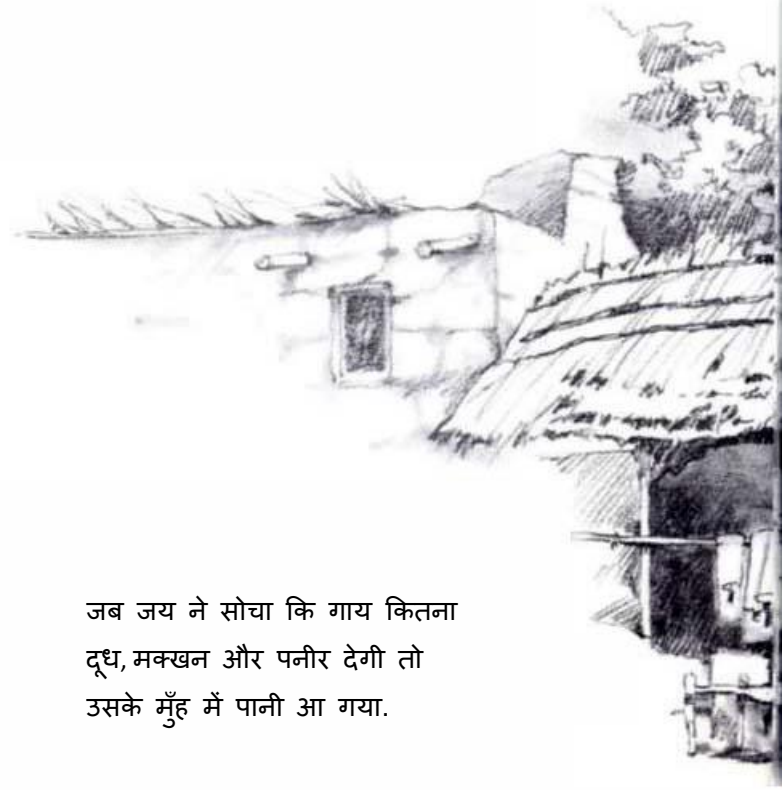
जब जय ने सोचा कि गाय कितना दूध, मक्खन और पनीर देगी तो उसके मुँह में पानी आ गया.
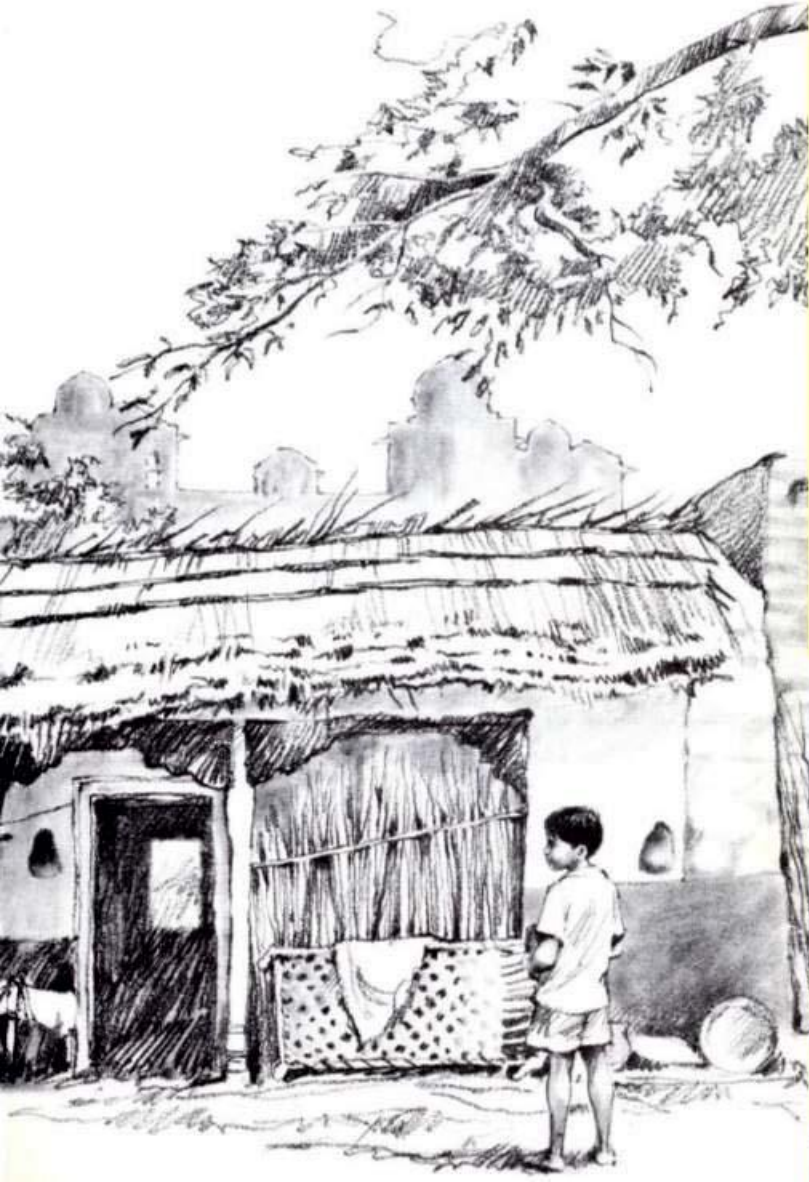
जब जय घर में दाखिल हुआ तो उसने देखा कि उसके पिता गाय खरीदने के लिए बचाए रुपये गिन रहे थे. चाँदी के सिक्कों को, बुनी हुई खाट पर छोटे-छोटे ढेरों में रखा गया था. वो खाट, दिन के दौरान एक मेज का काम करती थी.
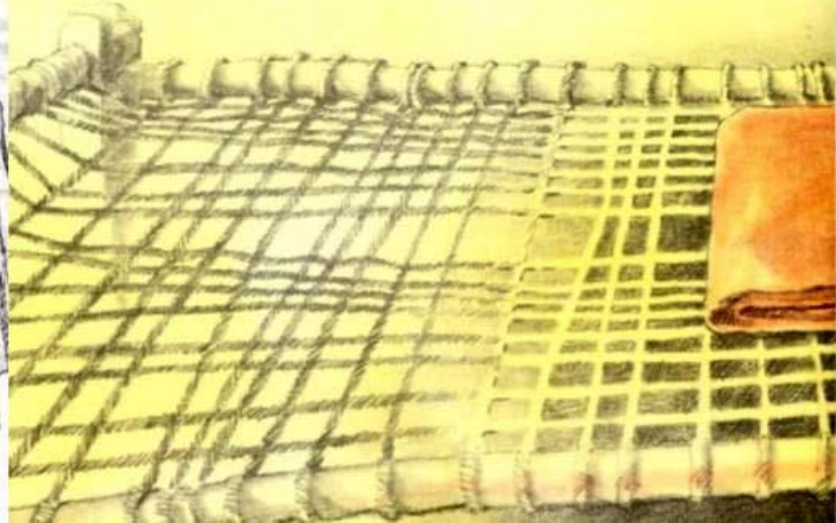
"अभी सौ रुपए और चाहिए," उसके पिता ने कहा, "फिर हमारे पास गाय खरीदने के लिए पर्याप्त पैसे होंगे."

"शायद अब ज़्यादा समय नहीं लगेगा," जय की मां ने उम्मीद जताते हुए कहा.

"कितना समय लगेगा?" जय ने पूछा.

"बहुत लंबा," उसकी माँ ने उत्तर दिया, "क्योंकि तुम प्रश्न पूछने के अलावा और कुछ नहीं करते हो.

एक गाय खरीदने के लिए हम सभी को कड़ी मेहनत करनी होगी!”
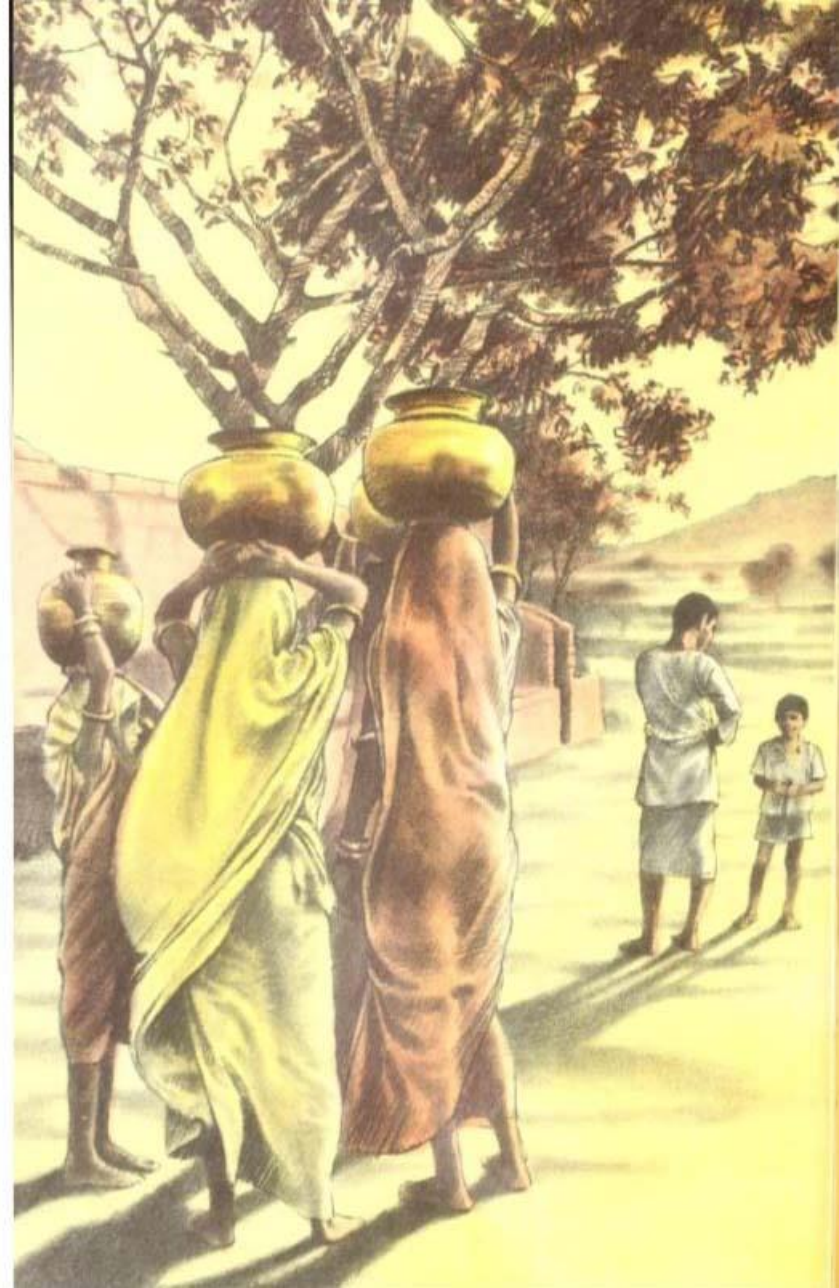
2. "वो एक मूर्ख गाय है!"

आख़िरकार एक दिन,

जब जय घर आया

तो पिताजी ने उसे एक अच्छी खबर सुनाई.

"मुझे बाज़ार में एक आदमी मिला,"
पिताजी ने जय से कहा,

“जिसे जल्दी अपनी गाय बेचनी है.
इसलिए मैं उसे कम कीमत पर खरीद पाऊंगा.
देखना, कल हमारे घर में एक गाय होगी.”

यह सुनकर जय की काली आँखें
गोल सिक्कों की तरह फैल गईं.

"मैं गाय को देखने के लिए इंतजार नहीं कर
सकता!" जय चिल्लाया.

"क्या कल मैं स्कूल से छुट्टी लेकर घर पर
रुककर गाय का इंतज़ार कर सकता हूँ?"

उसके पिता ने कहा, "स्कूल ख़त्म होने पर गाय
घर पर तुम्हारा इंतज़ार कर रही होगी."

"लेकिन याद रखना, मेरे बेटे, गाय कोई खिलौना
नहीं है.

उसे देखभाल और ध्यान की आवश्यकता होगी.
तुम उसकी देखभाल में ज़रूर मदद करना."

लेकिन जय ने मुश्किल से सी पिताजी की बात सुनी.

अगली सुबह, स्कूल में,

जय छुट्टी होने तक मिनट गिनता रहा.

"तुम इतने उत्साहित क्यों हो?"

उसकी दोस्त शांति फुसफुसाई.

"तुम भी बड़ी उत्साहित होतीं,"

जय ने जवाब में फुसफुसाया,

"अगर कोई सुंदर मोटी गाय

घर पर तुम्हारा इंतज़ार कर रही होती!"

"गाय!" शांति ने अपना सिर हिलाया.

"मुझे तुम्हारी बात पर विश्वास नहीं हो रहा है!"

"एक सुंदर सफेद गाय!" जय ने फिर कहा.

"मेरे घर आना और खुद अपनी आंखों से देखना

तभी तुम्हें मुझे मेरी बात पर यकीन होगा!"

“जय!” शिक्षक की आवाज़ सुनकर जय अपनी सीट से उछल पड़ा.

“तुम आज पढ़ाई पर बिल्कुल ध्यान नहीं दे रहे हो. क्या आज कुछ गड़बड़ है?"

जय ने सिर झुका लिया.

"हां, आज हमारे घर एक नई गाय आ रही है.”

"यह तो बहुत अच्छी बात है!" उसके शिक्षक ने कहा.

"तो फिर तुम आज जल्दी घर जा सकते हो. ऐसा दिन रोज़ नहीं आता जब घर में नई गाय आए.”

जय नंगे पैर धूल उड़ाते हुए घर की ओर दौड़ा.

और वहां उसकी झोपड़ी के सामने

एक गाय खड़ी थी.

लेकिन वो नई गाय नहीं हो सकती थी!

मोटी होने के बजाए

बड़ी और सफेद होने की बजाए,

जैसा कि जय ने अपने दिमाग में कल्पना की थी,

वो गाय छोटी और पतली थी

और उसका कोई विशेष रंग नहीं था.

उसका रस्सी का कॉलर घिसा हुआ था

वो गाय देखने में कोई ख़ास नहीं थी.

"मेरे रास्ते से हट जाओ, बदसूरत गाय!"
जय चिल्लाया.

लेकिन गाय बिल्कुल नहीं हिली.

तभी जय की मां दरवाजे पर आईं.

"यह अजीब गाय यहाँ से हट नहीं रही
है," जय ने शिकायत के लहज़े में कहा.

"यह अजीब गाय हमारी ही गाय है,"
उसकी माँ ने कहा.

"उसका नाम खूबी है."

"खूबी!"

खूबी का मतलब सुंदर होता है.

"आप ऐसी बदसूरत गाय को खूबी कैसे
बुला सकती हैं?" जय ने जानना चाहा.

"देखो, उसका नाम खूबी है," उसकी माँ
ने धीरे से कहा.
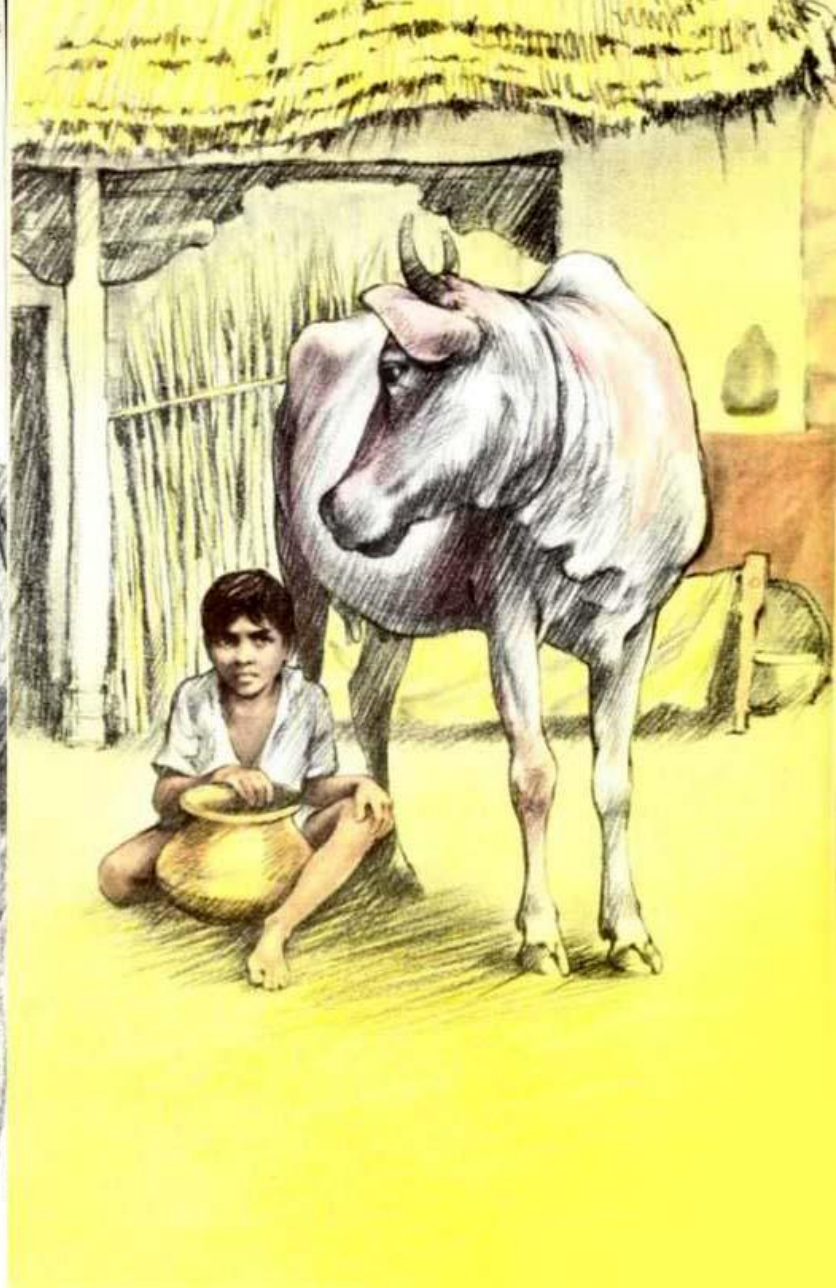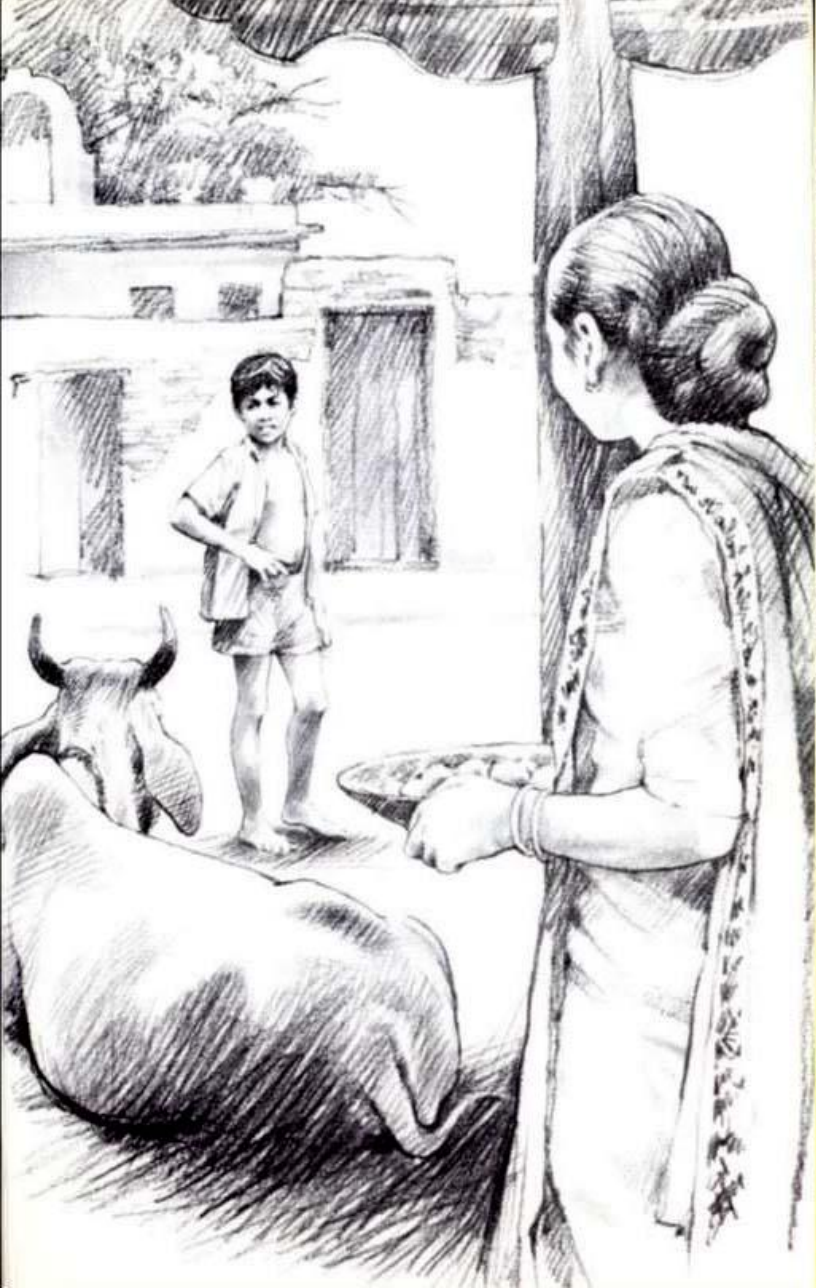
“तुम्हें उसका दूध निकालना सीखना होगा."

जय को पता नहीं था कि गाय का दूध दूना
कितना कठिन काम था.

उसके पिता ने उसे सिखाने की कोशिश की,

लेकिन जय को पक्का पता था

कि वो उस काम को कभी नहीं सीख पाएगा.

जय, खूबी के पास जाकर बैठ गया

जैसा कि उसने अपने पिता को करते देखा था.

उसने भी गाय के थनों को पकड़कर खींचना
शुरू किया.

लेकिन ज्यादातर दूध

बाल्टी की बजाए जमीन पर ही गिरा.

खूबी ने कोई मदद नहीं की.

वो एक जगह स्थिर नहीं खड़ी रही.

जय कैसे दूध दू सकता था

यदि खूबी उससे दूर घूमती रहती तो?

जय ने किसी को हँसते हुए सुना

और उसने शांति को देखा.

शांति ने मुंह पर हाथ रखा था.

"अनाड़ी!” शांति ने कहा.

“मैं तुम्हारी सुंदर नई गाय देखने
आई थी. मैं कुछ दूध पीना
चाहती हूँ.”

जय का चेहरा मुरझा गया.

"भले ही उसका नाम खूबी हो," जय बुदबुदाया,

"लेकिन वो कोई सुंदर गाय नहीं है."

जय ने लगभग खाली बाल्टी की ओर देखा.

“देखो, उसे तो दूध देना भी नहीं आता.

वो एक मूर्ख गाय है!"

"अपनी गाय के बारे में ऐसी बातें मत कहो.

ऐसा करना ठीक नहीं है!"

शांति ने भयभीत होकर जय की ओर देखा

जैसे जय ने कुछ भयानक कहा हो.
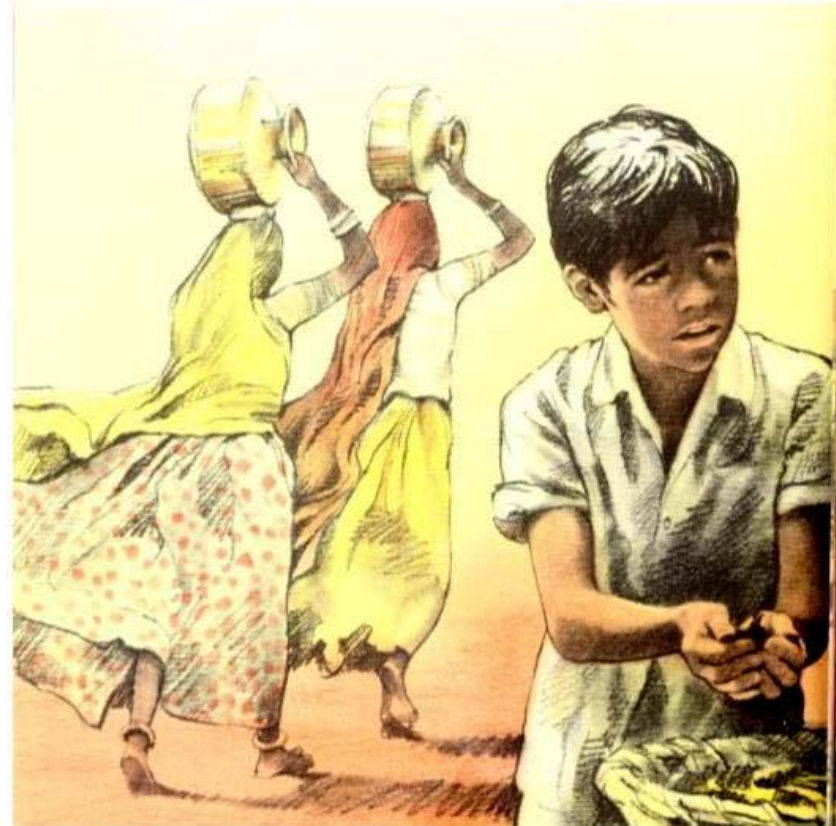
हर सुबह जय को, खूबी के नाश्ते के लिए

ताज़ी सब्जियां इकट्ठी करनी पड़ती थीं.

"तुम मेरे लिए एक मुसीबत हो," जय ने खूबी से कहा.

"मू!" गाय ने जवाब दिया.

जय को नई गाय बिल्कुल पसंद नहीं थी, लेकिन नई गाय, जय से उतना ही ज़्यादा प्यार करती थी.

जय जिधर भी मुड़ता, खूबी भी वहीं जाती थी, वो उसे परेशान करती थी और धक्का देती थी.

"हम उसे खूंटे से क्यों नहीं बाँधते हैं?" जय ने अपने पिता से पूछा.

"हम ऐसे प्राणी को क्यों बाँधेंगे जो हमें दूध देती हो?" उसके पिता ने आश्चर्य से कहा.

जय ने कोई जवाब नहीं दिया.

लेकिन वो बहुत गहराई से सोचने लगा.

यदि वो उस गाय जंगल में ले जाकर छोड़ दे, तो फिर गाय कभी भी उसके घर का रास्ता नहीं खोज पायेगी.
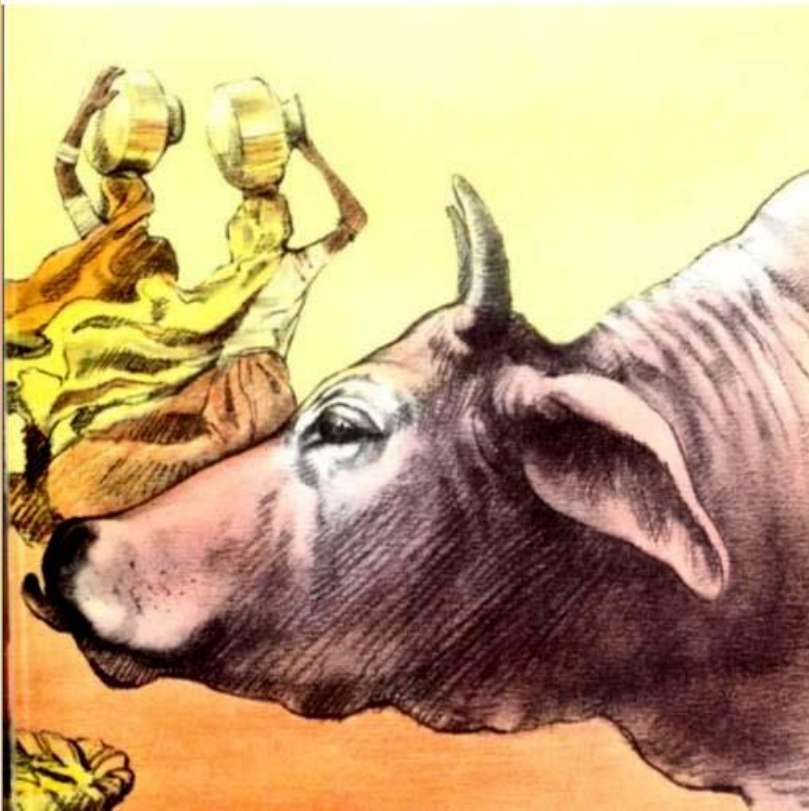
उसने आह भरी.

उसके पिता ने लंबे अरसे तक पैसे बचाए थे

और गाय खरीदने के लिए बहुत मेहनत की थी.

जय जानता था कि वो गाय को कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकता था.

वो उसके पिता की गाय थी.

लेकिन वो पक्की तरह जानता था

कि वो कभी भी खूबी को पसंद नहीं करेगा.
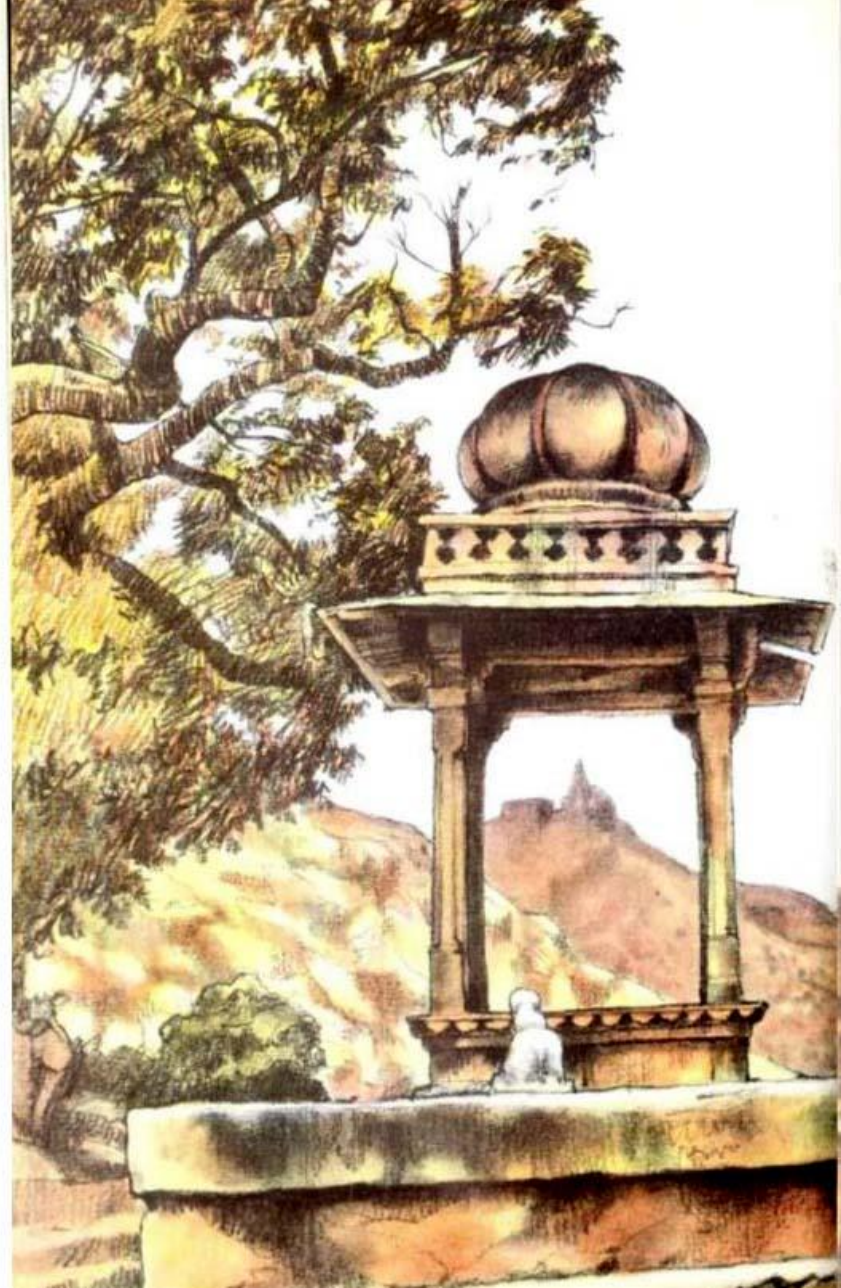
3. बाज़ार में

एक सुबह, जय पैदल स्कूल जा रहा था

जब उसने खुरों की आवाज़ सुनी.

उसने अपने पीछे खूबी के कदमों की आहट सुनी.

जय ने एक छड़ी उठाई

और वो खूबी की ओर लहराई.

"घर जाओ!" वो चिल्लाया.

लेकिन ख़ूबी की आँखों में प्यार भरा था,

वो जय के पास चलकर गई.

"शर्म की बात है!" शांति ने कहा.

वो सब कुछ देख रही थी.

"क्या तुम अपनी गाय को खुद मारोगे?"

शांति ने भयभीत स्वर में कहा.

"वो मेरी गाय नहीं है!" जय ने कहा.

"वो मेरे पिता की गाय है!

और इसके अलावा, मैंने उसे कभी नहीं मारा है."

उसने गाय की रस्सी पकड़ ली

और वो उसे वापस घर ले गया.

इससे उसे स्कूल पहुँचने में देर हो गई और उसे सजा के लिए स्कूल के बाद रुकना पड़ा.

जय अपना काम करने के लिए बहुत देर से घर पहुंचा, इसलिए पिता ने उसे सजा देने के लिए घर में ही रहने को कहा.

और वो सब खूबी की ही गलती थी!

अगले दिन कोई स्कूल नहीं था.

जय बाहर गया तो खूबी उसका इंतजार कर रही थी.

जय ने कहा, "तुम एक निकम्मी गाय हो. तुम्हें कुछ भी खाना नहीं मिलना चाहिए!"
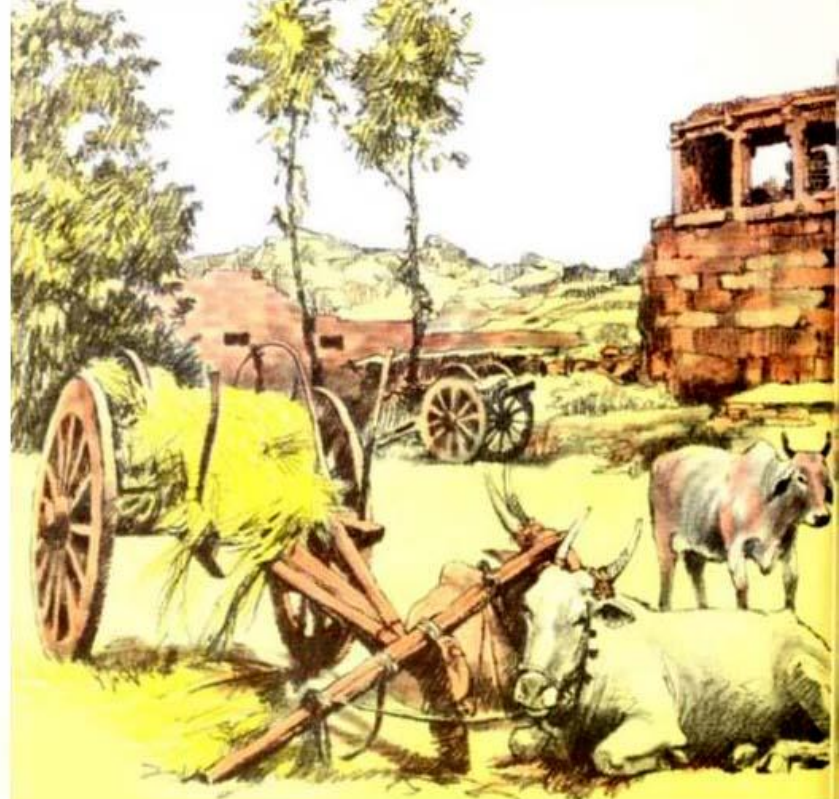
फिर जय मुड़ा और भाग गया.

वो अपनी परेशानियों को भूलने के लिए बाज़ार जा रहा था. उस दिन हाट में सभी दुकानदार अपनी दुकानें लगाते थे.

लेकिन खूबी को भी शहर की सड़कों का
शोर-शराबा और रंग बहुत पसंद था.

जब जय पीछे मुड़कर देखता तो वो खूबी को
अपने पीछे-पीछे आते हुए देखता था.

जल्द ही जय गांव की छोड़कर आगे बढ़ गया.

जब जय रेशम की दुकान पर पहुंचा,
तो वो चारों ओर देखने लगा.

उसने परखने के लिए रेशम का एक टुकड़ा
अपने हाथ में उठाया.

उसे यह दिखावा करना अच्छा लगता था
कि वो एक अमीर खरीदार था.

"तुम क्या चाहते हो, लड़के?" रेशम की दुकान का
मालिक बाहर आ गया और वो जय की ओर
देखने लगा.

जय ने कहा, "मुझे अभी कुछ भी नहीं चाहिए."

“फिर आगे बढ़ो,” दुकानदार ने कहा.

जय तेजी से आगे चला.

उसने सोचा, व्यापारी को कोई खरीदार ही चाहिए.

जय चलता रहा.

खूबी ने उसका पीछा किया.

एक बार खूबी बाज़ार में एक अजीब गंध सूँघने के लिए रुकी.

जब जय एक सपेरे को देखने के लिए रुका, तो खूबी ने घास खाने के लिए अपना सिर नीचे कर लिया.

जय का ध्यान सैकड़ों आकर्षक चीज़ों से सजे एक स्टॉल ने खींचा.

वहां गाय के लिए चमड़े का कॉलर भी लटका था.

कॉलर चमकदार पीतल की घंटियों से सजा था.

जय ने वहां पहुंचकर एक छोटी बांस की बांसुरी उठाई.

उसने बांसुरी को आज़माने के लिए उसे अपने मुँह से लगाया.

"उसे मुझे दो!" कर्कश आवाज वाले एक अजीब लड़के ने जय के हाथ से बांसुरी खींच ली.

फिर वो लड़का वहां से भाग गया.
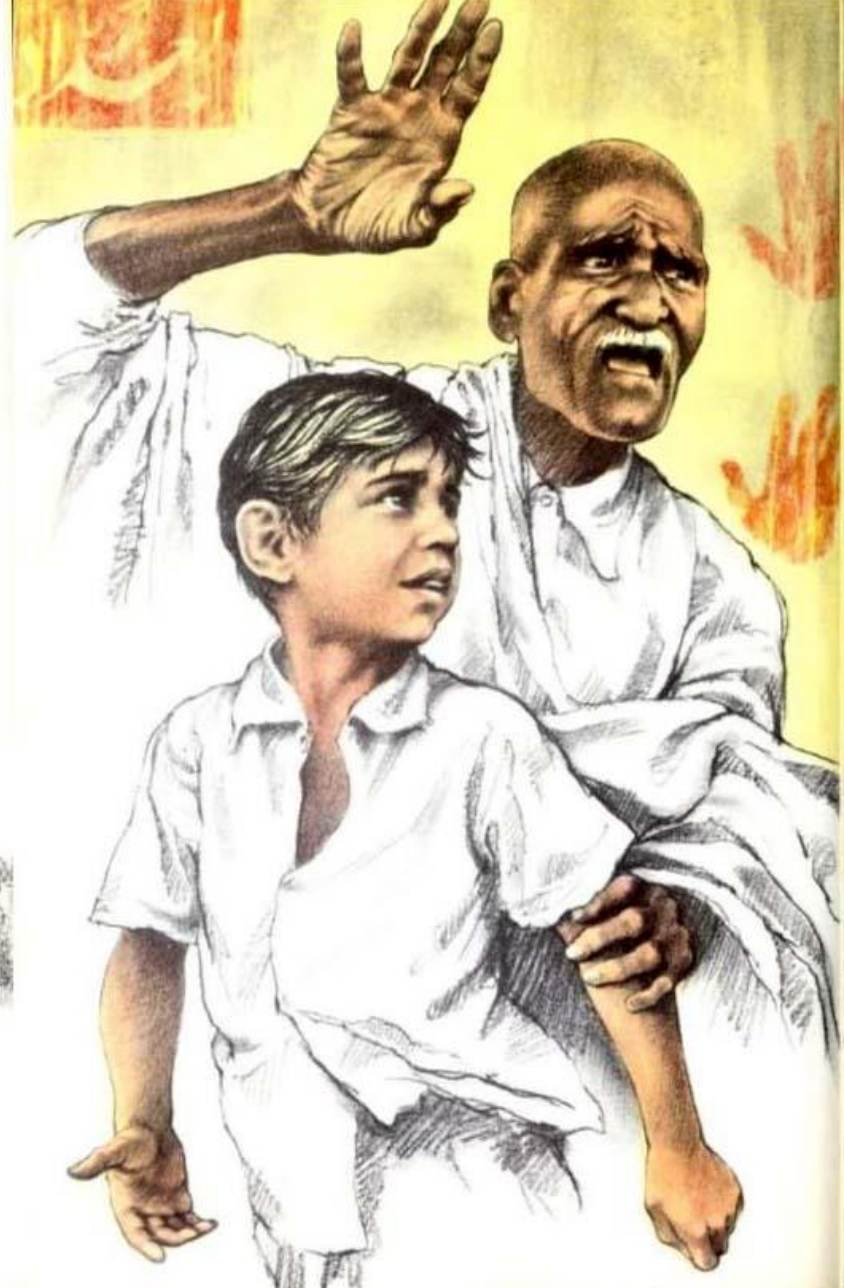
4. खूबी कहां थी?

"चोर! उसे पकड़ो!"

दुकानदार चिल्लाया.

इससे पहले कि उसे कुछ पता चलता

जय को एक शक्तिशाली हाथ ने पकड़ लिया था.

"मैंने एक चोर को पकड़ लिया है! पुलिस!"

"नहीं-नहीं!" जय भयभीत होकर चिल्लाया.

जय ने समझाने की कोशिश की.

लेकिन दुकानदार ने एक क्षण के लिए भी चिल्लाना बंद नहीं किया.

जय ने अपने चारों ओर बेतहाशा नज़र डाली.

वहां पर खूबी थी! एक झटके से, जय ने

खुद को दुकानदार की पकड़ से छुड़ाया.

फिर वो दौड़कर खूबी के पीछे जाकर छिप गया.

दुकानदार ने जय को पकड़ने की कोशिश की,

लेकिन खूबी ने दुकानदार का रास्ता रोक दिया.

जब दुकानदार ने दूसरी ओर से जय के पास

पहुँचने की कोशिश की तो खूबी ने

उसके सामने चक्कर लगाने लगी.

उसने इधर-उधर चक्कर लगाए

ठीक वैसे ही जैसे जब जय ने उसका

दूध दूने की कोशिश की थी.

दुकानदार ने घूम-घूमकर उसका पीछा किया.

लेकिन खूबी हमेशा जय की रक्षा के लिए वहां मौजूद रही.

जल्द ही वहां पर काफी भीड़ जमा हो गयी.

"क्या उस चोर को पकड़ने में कोई मेरी मदद नहीं करेगा?" दुकानदार चिल्लाया.

लेकिन जय को खूबी से दूर खींचने में किसी की भी हिम्मत नहीं हुई.

यदि उन्होंने गाय को नुकसान पहुँचाया तो फिर क्या होगा?

वो ज़रूर एक अच्छा लड़का होगा," दर्शकों में से एक ने कहा, "क्योंकि उसकी गाय उसकी हिफाज़त कर रही है."
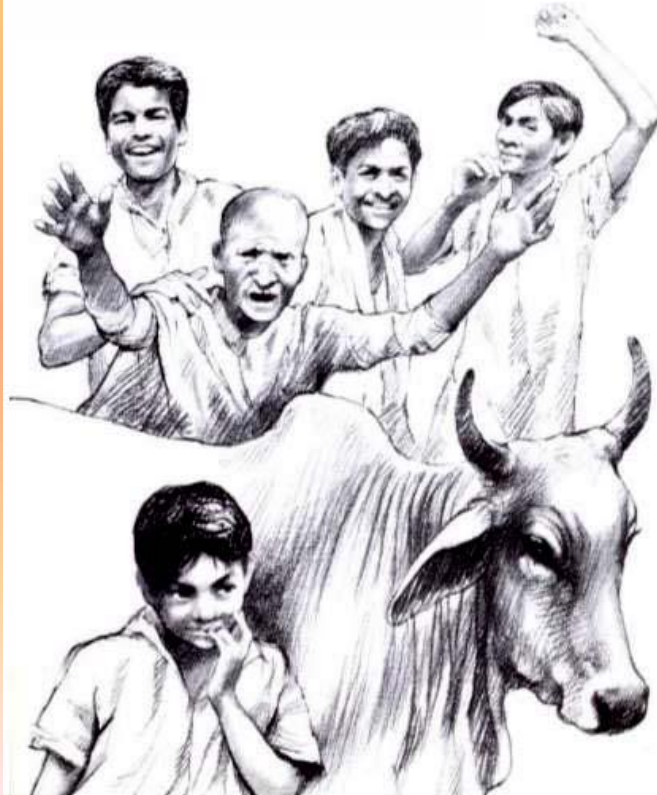
जय का दिल तेजी से धड़क रहा था और इसलिए वो खूबी के और करीब आ गया.

जय जानता था कि अगर उसने भागने की कोशिश की तो उसे तुरंत पुलिस के हवाले कर दिया जाएगा.

और तभी वहां एक पुलिसवाला आ पहुंचा! वो उस लड़के को अपने सामने धकेल रहा था जो बांसुरी लेकर भागा था.

“यह रहा आपका चोर,” पुलिस वाले ने कहा.

"मुझे माफ़ कर दो," दुकानदार ने जय से कहा, “मैंने तुम्हें जो कष्ट पहुँचाया है उसके लिए तुम अपनी पसंद की कोई भी एक चीज़ मेरी दूकान से चुन सकते हो."

जय ने बांसुरी की ओर हसरत भरी निगाहों से देखा.

फिर उसने खूबी के घिसे हुए कॉलर को देखा.

खूबी ने जेल जाने से उसे बचाया था!

"मैं अपनी गाय के लिए वो कॉलर लूंगा," जय ने कहा.

"वो जिसमें छोटी पीतल की घंटियाँ लगी हैं."

दुकानदार ने जय को गाय का कॉलर थमाया.

शुक्र है कि जय ने कोई बहुत महंगी चीज़ नहीं चुनी थी.

लेकिन एक दर्शक ने दुकानदार से कहा,

"आपने लड़के को बहुत डराया और परेशान किया है. आप उस लड़के को वो बांसुरी क्यों नहीं दे देते?"

फिर दुकानदार ने जय को को वो बांसुरी भी दे दी.

जय ने खूबी के गले में नया कॉलर बांध दिया.

"कितनी सुंदर गाय है!" उसने एक आदमी को कहते हुए सुना.

"काश मेरे पास ऐसी गाय खरीदने के लिए पर्याप्त पैसे होते!"

5. मेरी सुन्दर गाय!

जय ने खूबी को घूरकर देखा,

खूबी ने भी उसे देखा और वो मिमियाई.

वो अभी भी वैसी सफेद गाय नहीं थी जिसका सपना जय ने देखा था, लेकिन अपने चमकदार नए कॉलर में खूबी बहुत सुंदर दिख रही थी.

तुम मेरी खूबी हो, उसने सोचा. मेरी सुंदरी!

वे घर के लिए चल पड़े. जय, खूबी के करीब चला. जय को इतनी सुंदर गाय के पास चलने में गर्व महसूस हो रहा था.

जैसे ही वे गाँव के निकट पहुँचे, जय ने अपनी बाँसुरी पर एक सुन्दर धुन बजाई.

खूबी की घंटियों की आवाज ने
संगीत का मजा और बढ़ा दिया.

शांति ने उनकी आवाज़ सुनी

और वो भागकर बाहर आई

यह देखने के लिए कि संगीत कौन बजा रहा था.

"कितनी सुंदर जोड़ी है!" शांति ने कहा.

वो जानना चाहती थी कि जय को वो

कॉलर और बांसुरी कहां से मिली.

जय ने कहा, ''वो एक लंबी कहानी है.

हमारे साथ चलो और मैं तुम्हें उसके बारे में सब बताऊंगा."

"ठीक है, तुम सही समय से घर आये हो!"

घर पहुंचने पर जय के पिता ने उनका स्वागत किया.

"शायद हमें गाय को बांधना चाहिए और तुम्हें भी, जय!"

जय की काली आँखें नाच उठीं. "आप अपने इकलौते बेटे
और उसकी इकलौती गाय को कभी नहीं बांधेंगे?"

उसके पिता हँसे.

"जाओ अपनी गाय को चराओ और उसका दूध दू कर लाओ, मूर्ख," पिता ने कहा.

"जो लड़का अपनी गाय की देखभाल करेगा वो कभी भूखा नहीं सोएगा."

“मुझे भी मदद करने दो,” शांति ने कहा.

"अगर तुम उसे खाना खिलाओगी," जय ने कहा, "मैं मैं उसे अपनी बांसुरी पर एक छोटा गीत सुनाऊंगा."

तब शायद वो मुझे अपना दूध दूने देगी.”

खूबी ने ताज़ी सब्जियाँ चबायीं और जय का संगीत सुना.

जय नीचे उतरा और उसने अपना माथा गाय की गर्म पीठ पर दबाया.

उसने स्थिर हाथों से गाय के थनों को खींचा.

खूबी चुपचाप खड़ी रही जबकि उसके भरपूर दूध से बाल्टी भर गई.
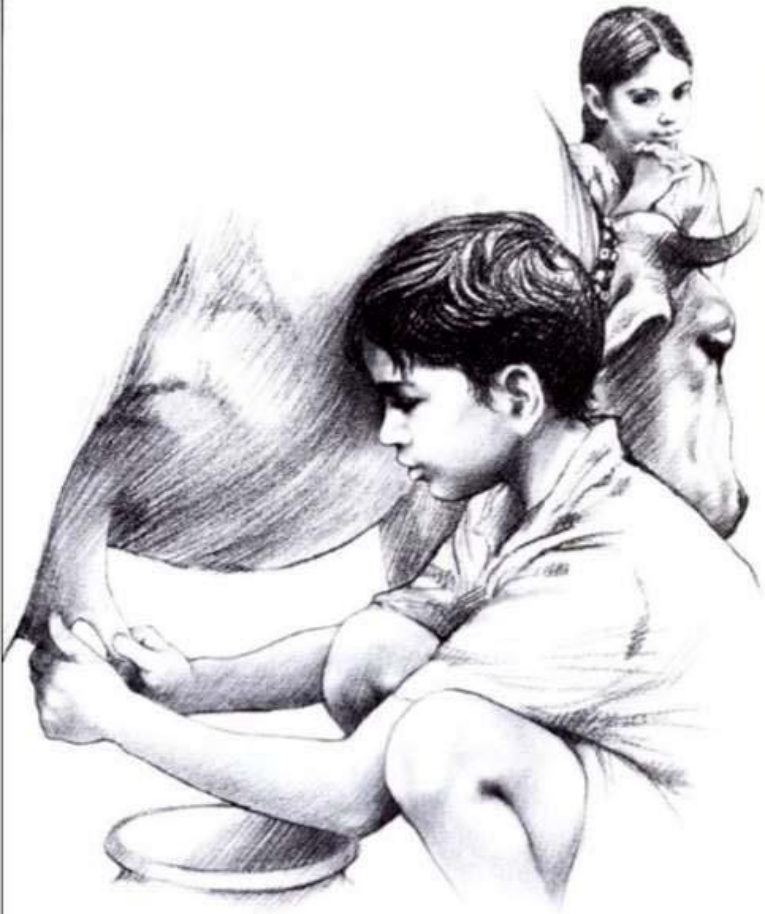
जल्द ही बाल्टी पूरी भर गई.

शांति ने जय की ओर देखा.

"मुझे प्यास लगी है." शांति ने धीरे से कहा.

जय उसकी ओर देखकर मुस्कुराया और उसने उसे गर्म, सफेद दूध पीने को दिया.

खूबी ने सिर हिलाया.

खूबी के नए कॉलर पर लगी घंटियों से खुशनुमा आवाजें आ रही थीं.